था कि वह बड़ी बस्ती का दामाद हो। सम्मान पाकर वह थई-थई हो जाता था और पछताने भी लगता था। बेकार में उसने रार मोल ले लिया था बड़ी बस्तीवालों से, ये लोग तो...। सोचते समय वह पिछला इतिहास बिल्कुल भूल जाता था। वर्तमान ही उसका सच होता दिख रहा था।

और फिर एक दिन फुटानी की सिर कटी लाश मिली। अफवाह तो यहां तक उड़ी कि फुटानी का सिर काटनेवाला बड़ी बस्ती का कोई नहीं था, बल्कि सुन्नर ही था। फुटानी सोया हुआ था और पूरी योजना के साथ सुन्नर ने...

बड़ी बस्ती में जश्न मनाया जा रहा था। फुटानी के मरने पर सभी खुशी से तहबोर थे। पैर का सबसे बड़ा कांटा निकल गया था। सूर्यभान अपनी मूंछों तले मुस्कुरा रहे थे। उनकी साम, दाम, दंड, भेद की नीति काम कर गई थी। वे अजेय हैं। उनका किला कभी नहीं ध्वस्त हो सकता है। इसी जश्न के माहौल में सुन्नर उनके बीच चला गया था। सूर्यभान को उनकी जबान याद दिलाने। सुर्यभान ये कहते हुए ठठाकर हंसे थे, ''जो तुम्हारा अपना था, उसका नहीं हो पाए तुम... और कौन-सी जबान? मैंने किसी को कोई जबान नहीं दी है। फुटानी मरा गया। वह एक डर था हमारे बीच। जब डर ही समाप्त हो गया तो तुम क्या चीज हो?'' अब सुन्नर पछता रहा था कि रो रहा था कि सुन्न हुआ जा रहा था? जश्न के माहौल से वह चुपके से निकल आया।

विजय वास्तविक की दो कविताएं

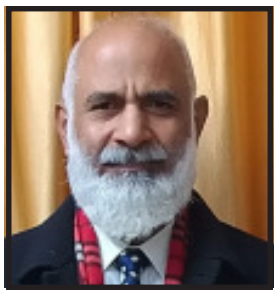

जन्म स्थानः नवाशहर पजाब, शिक्षाः दिल्ली विश्वविद्यालय से विज्ञान स्नातक। दिल्ली विश्वविद्यालय, बी.एससी. की पढ़ाई पूरी की और विज्ञान को समझने के बाद कई तरह के व्यापार किए। नौकरी कभी नहीं की। अपने अध्यन, शोध, विश्लेषण और अनुभव को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए वैचारिक लेखन, कविता और ग़ज़ल लेखन में सक्रिय हो गए। उनके लेखन कार्य का एकमात्र उद्देश्य चार्वाक, महावीर, बुद्ध, कबीर और रैदास की विचारधारा का संरक्षण और पोषण करना है तथा विचारों को अपने अंदाज में समाज तक पहुंचाना है। और समाज में व्याप्त ऊंच-नीच, भेदभाव, जातिवाद, ब्राह्मणवाद को खत्म करना है।

सुकून

चला था जानिब ए मंजिल मगर
सफर में ये क्या हो गया

समझ रहा था जिसे मंजिल
सफर वहीं से शुरू हो गया

पुरानी जानी-पहचानी सी हैं राहें
इन्हीं राहों में गुमराह हो गया

छोड़ दिया था गांव शहर के लिए
मुड़कर देखा मेरा गांव ही शहर हो गया

धोका मिला हैं सफर में बेइंतहा
पैर तो क्या जिगर भी लहुलुहान हो गया

उम्मीद थी जमाने से जब तक
जीना ही दुश्वार हो गया

उम्मीद खुद से है अब जमाने से नहीं
ये सबक मेरे दिल का सुकून हो गया

जमाने की हकीकत जानी है जबसे
मैं खुद से रूबरू हो गया

सुकून की तलास में सफर करता गया
सफर ही जिंदगी का सुकून हो गया

शैतान

गुनाह करके अफसोस कर ले जो
उस इंसान में ईमान बसा है

गुनाह करके उफ भी न करे जो
उस इंसान में शैतान बसा है

जरा गौर से तो देखो यारों
वो शैतान किस जगह बसा है

हर मुल्क को देख लिया हमने
हर मुल्क में शैतान बसा है

हर शहर को देख लिया हमने
हर शहर में शैतान बसा है

हर मकान को देख लिया हमने
हर मकान में शैतान बसा है

हर दिल को देख लिया हमने
हर दिल में शैतान बसा है

खुद पर गौर किया जब हमने
शैतान तो हम में भी बसा है